अच्छे कर्म ही लोगों को दूसरों से अलग और मूल्यवान बनाते है।
– अज्ञात

अंतरराष्ट्रीय एकजुटता पहली बार

जी–20 के सदस्य देशों को मिलकर इस वैश्विक संक्रमण को दूर करने के उपायों पर बात करनी चाहिए। भारत इस महामारी के प्रभावों से निपटने के लिए कई नीतिगत उपाय कर रहा है। उन्हें वे पूरा कर ले गए तो कोरोना के अभिशाप से निपटने में दुनिया को इससे काफी मदद मिलेगी।

रमन जोशी।

असाधारण परिस्थितियों में आयोजित जी–20 शिखर सम्मेलन को इस बार विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए संपन्न करना पड़ा। आज जब पूरी दुनिया कोरोना वायरस से जंग लड़ रही है, इसके खिलाफ अंतरराष्ट्रीय एकजुटता पहली बार संसार की 20 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के मंच जी–20 पर ही देखी गई। इस मंच पर सदस्य देशों ने जो संकल्प लिए हैं, उन्हें वे पूरा कर ले गए तो कोरोना के अभिशाप से निपटने में दुनिया को इससे काफी मदद मिलेगी।

कोरोना वायरस के असर से वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाली मार का मुकाबला करने के लिए जी–20 देशों ने पांच ट्रिलियन डॉलर खर्च करने का फैसला किया है। सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए सऊदी अरब के शाह सलमान ने जी–20 के नेताओं से अपील की कि वे वैश्विक महामारी से निपटने के लिए 'कारगर एवं समन्वित कार्यवाही' की ओर बढ़ें। उन्होंने जी–20 देशों से विकासशील देशों की मदद करने का भी आग्रह किया। इतने सारे राष्ट्राध्यक्षों के विडियो संवाद का यह पहला अवसर था, जिसमें अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप, जापान के पीएम शिंजो आबे और चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग के अलावा विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व खाद्य संगठन और अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन समेत कई अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के प्रतिनिधि भी मौजूद थे। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि अगर सच में दुनिया की हालत सुधारनी है तो हमें केवल आर्थिक पहलू पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय जनकल्याण पर फोकस करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें इस बहस में नहीं जाना चाहिए कि कोरोना वायरस का संक्रमण कहां से या कैसे शुरू हुआ। जी–20 के सदस्य देशों को मिलकर इस वैश्विक संक्रमण को दूर करने के उपायों पर बात करनी चाहिए। भारत इस महामारी के प्रभावों से निपटने के लिए कई नीतिगत उपाय कर रहा है। शुक्रवार को भारतीय रिजर्व बैंक ने मुख्य ब्याज दर रेपो रेट में 0.75 प्रतिशत और रिवर्स रेपो रेट में 0.90 प्रतिशत की कटौती घोषित की, जो एक दिन में ब्याज दरों में अभी तक का सबसे बड़ा बदलाव है। आरबीआई गवर्नर ने कहा कि इन कदमों से बैंकों के पास कर्ज देने के लिए 3.74 लाख करोड़ रुपये के बराबर अतिरिक्त नकदी उपलब्ध होगी।

सभी वाणिज्यिक बैंकों और ऋणदाता संस्थानों को छूट दी गई है कि वे किसी भी कर्ज की किस्तें तीन महीने तक न जमा होने पर भी उसे बट्टे खाते में न डालें। उम्मीद करें कि तमाम देश अपने यहां ऐसे सभी उपाय करेंगे, जिनसे घर बैठने के बावजूद लोगों का जीवन चलता रहे, वे अपनी कर्ज अदायगी को लेकर परेशान न हों, और जैसे ही महामारी काबू में आनी शुरू हो, विश्व अर्थव्यवस्था के पटरी पर लौटने की शुरुआत भी हो जाए।

मंदिर और महामारी

अशोक वोहरा। कोई मुंह से बोले या न बोले, यह सवाल तो हर किसी के मन में होता है कि वह अपने बच्चों के लिए क्या छोड़कर जाने वाला है। ज्यादातर लोग इसका जवाब जमीन–जायदाद, धन–संपत्ति में ढूंढते हैं और इसी आधार पर अपने जीवन को सफल या असफल समझते हैं। कुछेक ही ऐसे होते हैं जो अपनी कामयाबी बच्चों को सक्षम बना देने में मानते हैं और यह उक्ति दोहराते रहते हैं– 'पूत सपूत तो का धन संचय, पूत कपूत तो का धन संचय।' मगर जिनकी मैं यहां बात कर रहा हूं, वे इन दोनों में से किसी भी श्रेणी में फिट नहीं बैठते थे। ताजिंदगी अपने दायित्वों का निर्वाह करने में ही लगे रहे और इस शिद्दत से लगे रहे कि किसके लिए क्या छोड़ कर जाएंगे जैसे सवालों की ओर देखने तक का वक्त नहीं निकाल पाए।

धर्म-दर्शन

संपादकीय

सबके अपने दावे

चीन में नवंबर से एक नए कोरोना वायरस से फैलने वाली बीमारी शुरू हुई, जो कुछ मायने में इनफ्लुएंजा (फ्लू) से मिलती–जुलती है लेकिन ज्यादा मारक है। इस बीमारी के बारे में सबसे मानीखेज बात उसके संक्रमण की तीव्रता है, जिसके कारण यह पहले चीन में महामारी बनी, फिर अन्य देशों में फैली और अब वैश्विक आपदा का रूप ले चुकी है। अभी फरवरी तक दुनिया के बाकी देश इस बीमारी को हंसी–मजाक में ले रहे थे। इसे चीनियों का मसला समझते हुए बहुत से लोगों ने हिकारत से चीन के खानपान से इसका संबंध जोड़ा। अफवाह फैली कि सी–फूड, सांप, पैंगोलिन, चमगादड़ इत्यादि के मांस खाने से कोरोना फैला। तथ्य यह है कि सांप में कोरोना वायरस नहीं पाया जाता और पैंगोलिन लगभग विलुप्तप्राय जीव है जो सहज रूप में मीट मार्केट में उपलब्ध नहीं है। चमगादड़ भी सी–फूड मार्केट में मिलता नहीं है। यह सही है कि कई तरह के कोरोना वायरस चमगादड़ में पाए जाते हैं। चमगादड़ का सूप पीने से यह बीमारी नहीं फैली है क्योंकि इस बात का कोई सबूत नहीं है कि कोरोना वायरस ने सीधे चमगादड़ से मनुष्य में जंप किया है। बहुत संभव है कि मनुष्य और चमगादड़ के बीच कोई अन्य जानवर इंटरमीडिएट है, जिसकी अभी पहचान नहीं हुई है। जैसे कि 2003 में जो सार्स का आउटब्रेक हुआ वह मनुष्य में सिवेट बिल्ली से चीन में फैला, हालांकि यह वायरस चमगादड़ में पहले से मौजूद रहा है। 2012 का एमईआरएस फ्लू ऊंटों से मनुष्य में फैला और इसका केंद्र सऊदी अरब था।

अगले हफ्ते इसका गठन करने के लिए पार्टी का एक वर्ग शिवराज सिंह चौहान पर दबाव भी बना सकता है। चर्चाओं के अनुसार शिवराज सरकार में इस बार एक से दो डेप्युटी सीएम भी बन सकते हैं।

संतुलन बनाने की चुनौती

नरेंद्र नाथ

यह हफ्ता मध्य प्रदेश की राजनीति को लेकर गर्म रह सकता है। कोरोना महामारी के बीच मध्य प्रदेश में कमलनाथ की अगुआई वाली कांग्रेस सरकार का पतन हो गया और शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व वाली बीजेपी सरकार सत्ता में आ गई। लेकिन सरकार का गठन अभी तक पूरा नहीं हुआ है। शिवराज सिंह चौहान ने अकेले शपथ ली है। सरकार में उनके सिपहसालार कौन होंगे, अभी यह तय नहीं हुआ है। चूंकि 14 अप्रैल तक पूरे देश में लॉकडाउन होने के आदेश निकल चुके हैं, इसलिए शिवराज सिंह चौहान ने उसके बाद ही मंत्रिमंडल के गठन के संकेत दिए हैं। लेकिन पार्टी के कुछ नेताओं का मानना है कि जरूरी एहतियात उठाकर बीच में भी गठन किया जा सकता है जिससे गवर्नेंस और पार्टी दोनों स्तरों पर जारी सस्पेंस समाप्त हो। सूत्रों के अनुसार अगले हफ्ते इसका गठन करने के लिए पार्टी का एक वर्ग शिवराज सिंह चौहान पर दबाव भी बना सकता है। चर्चाओं के अनुसार शिवराज सरकार में इस बार एक से दो डेप्युटी सीएम भी बन सकते हैं। साथ ही इस पर भी सबकी नजर रहेगी कि सरकार के संतुलन में शिवराज का पूरी तरह दबदबा बना रहता है या समानांतर ताकतों

का भी प्रभाव दिखता है। ज्योतिरादित्य के कांग्रेस छोड़कर बीजेपी में जाने के बाद प्रदेश की राजनीतिक समीकरणों में नए सिरे से बदलाव आ रहा है। ऐसे में बीजेपी के अंदर शक्ति संतुलन किस ओर बैठता है, यह सियासी सवाल बना हुआ है।

दरअसल शिवराज पर अपनी टीम बनाने के लिए पड़ रहे दबाव के पीछे कुछ सियासी कारण हैं। बीजेपी में एक वर्ग का कहना है कि अगर इसी आपा–धापी में शिवराज सिंह चौहान शपथ ले सकते हैं तो बाकी के मंत्री शपथ क्यों नहीं ले सकते? दरअसल इनमें बड़ी चिंता कांग्रेस से आए बागियों की है। 6 मंत्री सहित 22 विधायक कांग्रेस छोड़कर बीजेपी में आ गए। इन्हें बीजेपी की ओर लाने में ज्योतिरादित्य सिंधिया ने बड़ी भूमिका निभाई। जाहिर है कि ज्योतिरादित्य यह जरूर चाहेंगे कि शिवराज सरकार में उनके लोगों का प्रतिनिधित्व मजबूत हो। हालांकि ऐसा होना बहुत आसान नहीं होगा। सीएम पद के उम्मीदवार के रूप में सामने रहे नरोत्तम मिश्रा के शिवराज सरकार में डेप्युटी सीएम के रूप में शामिल होने की चर्चा है। वहीं पार्टी के पुराने दिग्गज नरेंद्र सिंह तोमर और कैलाश विजयवर्गीय भी शिवराज सरकार में अपने नजदीकी नेताओं का उचित प्रतिनिधित्व चाहेंगे। जाहिर है कि इसके लिए संतुलन बनाना उतना आसान नहीं होगा। इसी कशमकश में सभी नेता जल्द से जल्द से कैबिनेट का गठन चाहते हैं। इसके अलावा बीजेपी के भी कुछ असंतुष्ट नेता हैं जो संतुष्ट होने की एवज में मंत्री पद चाहते हैं। जब कमलनाथ सरकार संकट में थी तो इनमें से दो बीजेपी विधायक उनके संपर्क में आए भी, लेकिन बीजेपी ने उन्हें रोक लिया। अब वे अगले कदम के रूप में इसके लिए इनाम पाने की अपेक्षा कर रहे हैं। जाहिर है कि महामारी का संकट हटने के बाद भी अगर शिवराज अपनी टीम बनाते हैं तो इस बार उन्हें अब तक की सबसे दुरूह चुनौती का सामना करना पड़ सकता है। वैसे यह सिर्फ मध्य प्रदेश का ट्रेंड नहीं है, बल्कि जिन प्रदेशों में भी बीजेपी ने कांग्रेस या दूसरे विपक्षी दल से सत्ता छीनी, वहां संतुलन बनाने में परेशानी हुई।

सूडोकु नवताल- 5232

मध्यम

4			9		6	1		8
6	8							
	1	7	3	8		4		
3	4		6		7			9
5		1	8			2		7
2			5		1		8	4
		3		7	5	8	6	
							9	5
7		6	2		8			1

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5231 का हल

2	9	8	3	5	6	1	7	4
4	5	3	2	1	7	9	8	6
7	1	6	4	8	9	2	5	3
8	2	5	6	9	1	3	4	7
3	6	4	7	2	5	8	1	9
1	7	9	8	3	4	5	6	2
5	4	1	9	7	2	6	3	8
6	3	2	1	4	8	7	9	5
9	8	7	5	6	3	4	2	1

अपना ब्लॉग

आइसोलेशन की रणनीति सोच–समझ कर

मोहन। भारत में अभी मरीजों की संख्या उतनी ज्यादा नहीं है, लेकिन वे बहुत बड़े भूगोल में फैले हुए हैं। ऐसे में आइसोलेशन की रणनीति सोच–समझ कर ही अपनाना ठीक रहेगा। सबको घरों में बंद रहने की हिदायत देना, बाजार बंद करवाना, ट्रेनें न चलाना, सड़कें खाली करवाना क्या दीर्घकालिक उपाय हो सकते हैं? जो लोग खुद को घरों में बंद करके भी अपने सारे काम कर सकते हैं, वे देश की कुल आबादी का बहुत छोटा सा हिस्सा हैं। 2011 की जनगणना में, यानी कोई दस साल पहले देश में 17 लाख से ज्यादा लोग ऐसे थे, जिनके पास घर ही नहीं था। यकीनन यह संख्या पहले से कुछ बढ़ी ही होगी।
देश की कुल श्रम शक्ति का करीब 95 फीसदी हिस्सा असंगठित क्षेत्र में सक्रिय है, जिसके पास कहने को घर जरूर है लेकिन घर में हफ्ते–दस दिन बंद रहना उनमें बहुतों का जीना मुश्किल बना सकता है।